

हिंदी के बूते आई.टी. क्षेत्र में मिलेगा रोजगार

हिंदी माध्यम से कीजिये रोजगारपरक पाठ्यक्रम

पहले हिंदी माध्यम से पढ़ाई करने पर उच्च वेतनमान पर नौकरी पाना बहुत आसान नहीं था, खासकर प्रबंधन व आई.टी. क्षेत्रों में अंग्रेजी का बोलबाला था। गरीब लोग अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा न प्राप्त कर पाने के कारण निजी संस्थानों में उच्च वेतनमान पर रोजगार पाने में असमर्थ हो जाते थे लेकिन अब कम्प्यूटर और आई.टी. क्षेत्र में भी कैरियर बनाना हिंदी भाषी लोगों के लिए बिल्कुल आसान होने जा रहा है। अंग्रेजी में कमजोर होने के कारण निराश विद्यार्थी भी अब हिंदी के बूते इस क्षेत्र में अपना लक्ष्य पूरा कर सकेंगे क्योंकि हिंदी भाषा को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में सम्बृद्ध करने तथा रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से स्थापित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने पहली बार हिंदी माध्यम से एम.बी.ए., बी.बी.ए., एम.एस.सी. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, एम.ए.मीडिया प्रबंधन, एम.ए.इन कंप्यूटर लिंग्विस्टिक्स, मास्टर ऑफ इन्फॉर्मेटिक्स एण्ड लैंग्वेज इंजीनियरिंग सहित कई रोजगारपरक पाठ्यक्रमों में एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी. शुरू किया है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान हेतु भाषा का अहम स्थान है। विश्वमैत्री की संकल्पना पर आधारित विश्वविद्यालय में चीनी, स्पेनिश, जापानी, फ्रेंच का दो वर्षीय एडवांस्ड डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है। फिल्म एवं अभिनय का क्षेत्र ग्लैमर कैरियर के रूप में जाना जाता है। हिंदी विश्वविद्यालय ने पहली बार फिल्म एवं ड्रामा में एम.ए., एम.फिल. व पीएचडी की पढ़ाई हिंदी माध्यम से शुरू किया है तथा डायस्पोरा में एम.फिल. भी...

सुप्रसिद्ध कथाकार व कुशल प्रशासक कुलपति विभूति नारायण राय से संपर्क करने पर वे कहते हैं कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी माध्यम से ज्ञान के विविध अनुशासनों में गंभीर शोध-अध्ययन के उद्देश्य से हुई थी, ताकि हिंदी महज साहित्य व चिंतन की भाषा के रूप में सीमित न रह जाए, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की परिपक्व भाषाओं के समकक्ष वह पहुँच सके और वैश्विक स्तर पर भाषा-राजदूत की महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा सके। उन्होंने बताया कि हिंदी केवल भाषा नहीं, एक चेतना है और उसी चेतना के लिए खड़ा यह विश्वविद्यालय महज एक अध्ययन का केंद्र नहीं, बल्कि हिंदी का अभियान है। चार विद्यापीठों-संस्कृति, साहित्य, भाषा और अनुवाद में विभिन्न विषयों को बांटकर बेहतर अध्ययन-अनुशीलन का समुचित प्रबंध यहाँ किया गया है। अहिंसा और शांति सिर्फ नारा नहीं, अपितु एक विकसित समाज को निर्मित करने के अस्त्र हैं, उनमें ज्ञान के अकूत भंडार हैं। एक विभाग के रूप में इस विषय के अध्ययन की समूची प्रक्रिया को विद्यार्थी यहाँ सीख रहे हैं। पठन-पाठन की यही वैज्ञानिक पद्धति बौद्ध अध्ययन में भी अपनाई गई है। दलित और जनजाति केवल राजनीति के विषय नहीं, बल्कि समाज व संस्कृति को विकसित करने के लिए ज्ञान के स्रोत हैं। इसी चेतना के साथ दलित एवं जनजाति विभाग निरंतर क्रियाशील है। स्त्री अध्ययन विभाग पश्चिमी दृष्टि से भिन्न मौलिक तौर पर परिवर्तनगामी नजरिये से इस विषय के अध्ययन और अध्यापन की दिशा तय कर रहा है। अनुवाद अनुशासन के जरिए संभवतया पूरी दुनिया में भाषायी समाज को जोड़ने की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय ने ली है। प्रौद्योगिकी की भाषा नहीं होती है, उसे अपनी भाषा में ढालने का दायित्व पूरा करना पड़ता है। भाषा-प्रौद्योगिकी और भाषा-अभियांत्रिकी विभाग हिंदी के वैश्विक संवर्द्धन व प्रसार के लिए कृत संकल्पित है। तुलनात्मक साहित्य, जनसंचार, मानवशास्त्र, फिल्म एवं नाट्य कला तथा हिंदुस्तानी ज़बान की पढ़ाई भी यहाँ वैश्विक मानदंडों को ध्यान में रखकर की जा रही है। देश के दूरदराज क्षेत्रों में भी उच्च शिक्षा से वंचित नागरिकों को उनकी भाषा हिंदी में ही शिक्षा का अवसर

विश्वविद्यालय ने मुहैया कराया है। प्रबंधन जैसे विषय की पढ़ाई हिंदी माध्यम से कराने की चुनौती विश्वविद्यालय ने स्वीकार की है। विदेशों में विश्वविद्यालय का केंद्र खोला जाएगा। वर्धा में अध्ययन के लिए आनेवाले विदेशी छात्रों के लिए विश्वविद्यालय में विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त फादर कामिल बुल्के अंतरराष्ट्रीय छात्रावास बनाया गया है। शोध और अनुसंधान के जरिए हम हिंदी और उसके अध्ययन-अध्यापन को विश्व के मानस पटल पर गर्व के साथ खड़े होने का भरोसा देते हैं। हमारा जोर शोध की एक ऐसी संस्कृति विकसित करने पर है जिससे कि पूरे देश और दुनिया में हिंदी के माध्यम से शोधों को देखना अपरिहार्य हो।

कुलपति राय ने बताया कि विश्वभाषा बनाने के मकसद से इस विश्वविद्यालय ने दो महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। विदेशी विश्वविद्यालयों व संस्थाओं में हिंदी व हिंदी माध्यम से विभिन्न अनुशासनों के अध्ययन व अनुसंधान के लिए यह विश्वविद्यालय समन्वयक की भूमिका निभाने जा रहा है। साथ ही विश्वभर के हिंदी पाठकों को भारतेंदु से लेकर अब तक के कॉपीराइट मुक्त महत्वपूर्ण हिंदी साहित्य को सुलभ कराने का बीड़ा इसने उठाया है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट हिंदीसमयडॉटकॉम पर उत्कृष्ट हिंदी साहित्य के एक लाख पृष्ठ उपलब्ध कराये जा रहे हैं, इसे विश्व की प्रमुख भाषा में उपलब्ध कराया जाएगा। ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में हिंदी में स्तरीय सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास विश्वविद्यालय द्वारा किया जा रहा है।

हिंदी विश्वविद्यालय एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय में हिंदी माध्यम से रोजगारपरक पाठ्यक्रम शुरू करने के संदर्भ में प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने कहा कि विश्वविद्यालय, पूरी दुनिया में हिंदी को नई पहचान दिलाने के लिए लगातार प्रयासरत है। हिंदी को सूचना तकनीक और कंप्यूटर लैंग्वेज से जोड़ने से पूरी दुनिया में हिंदी की साख बढ़ेगी। साथ ही विशाल हिंदी भाषी वर्ग के लिए रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित रोजगारपरक पाठ्यक्रम:

एम.ए. नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन

एम.ए. कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स

मास्टर ऑफ इन्फॉर्मेटिक्स एण्ड लैंग्वेज इंजीनियरिंग

पी-एच.डी. इन इन्फॉर्मेटिक्स एण्ड लैंग्वेज इंजीनियरिंग

भाषा प्रौद्योगिकी हिंदी (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

मास कम्यूनिकेशन (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

एम.एस.सी. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

एम.ए. मीडिया प्रबंधन

हिंदी अनुवाद प्रौद्योगिकी (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

तुलनात्मक साहित्य (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

स्त्री अध्ययन (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

समाज कार्य (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

अहिंसा एवं शांति अध्ययन (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

मानव विज्ञान (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

दलित एवं जनजाति अध्ययन (एम.ए., एम.फिल. पी-एच.डी.)

बौद्ध अध्ययन

हिंदी डायस्पोरा(एम.फिल.)

एम.बी.ए. (दूरस्थ शिक्षा)

बी.बी.ए. (दूरस्थ शिक्षा)

विदेशी भाषा :चीनी, स्पेनिश, जापानी, फ्रेंच।

डिप्लोमा पाठ्यक्रम : मराठी, तमिल, उर्दू, डी.सी. (डिप्लोमा इन कंप्यूटर एप्लिकेशन), तुलनात्मक साहित्य, हिंदुस्तानी, बौद्ध अध्ययन, फॉरेंसिक साइंस, पाली, हिंदी अनुवाद।

प्रवेश हेतु पात्रता : एम.ए. पाठ्यक्रम हेतु किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से सम्बद्ध अनुशासन तथा किसी भी अनुशासन में न्यूनतम 40 प्रतिशत) अनुसूचित जाति/जनजाति 35 प्रतिशत (अंकों के साथ स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण।

अध्ययन शुल्क :अध्ययन शुल्क बहुत ही कम है, एम.ए. के लिए विविध अनुशासनों में 1495/-रु.से 3845/-रु.। एम. फिल. के लिए विविध अनुशासनों में 1345/-रु. से 3895/-रु.। पीएच्.डी. पाठ्यक्रम के लिए विविध अनुशासनों में 3245/- रु.से 4245/-रु.। सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा के लिए 1395/-रु. से 6000/-रु.।

विद्यार्थियों को दी जानेवाली सुविधाएं (क) एम.ए. में सभी विद्यार्थियों को 1000 रुपये प्रतिमाह स्कॉलरशिप, (ख) एम.फिल में प्रत्येक को 3000 रुपये प्रतिमाह स्कॉलरशिप, (ग) पी-एच.डी में प्रत्येक को 5000 रुपये प्रतिमाह स्कॉलरशिप (एस.सी./एस.टी को राजीव गांधी फेलोशिप के तहत 16000 रुपये प्रतिमाह), (घ) प्रत्येक को इंटरनेट की सुविधा। आवासीय विश्वविद्यालय होने के कारण विद्यार्थियों को रियायती दरों पर छात्रावास, बस की सुविधा, प्रत्येक विद्यार्थी को कंप्यूटर व इंटरनेट तथा मेडिकल की सुविधा, (च) एम.ए. में प्रवेश के लिए साक्षात्कार में बुलाए जाने वाले अभ्यर्थियों को शयनयान का रेल किराया दिया जाएगा।

प्रवेश प्रक्रिया: एम.ए. के सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश साक्षात्कार के आधार पर दिया जाएगा। एम.फिल हेतु दाखिला प्रक्रिया क्रमशः दो चरणों में पूरी होगी। क.पहले चरण में लिखित परीक्षा होगी। इसमें संबंधित विषय की सामान्य जानकारी /समझ से संबंधित वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न होंगे।(ख) दूसरे चरण में साक्षात्कार होगा। पी-एच.डी. हेतु यू.जी.सी. के न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया विनिमय, 2009 के अनुसार प्रवेश तीन चरणों में होगा (क) पहले चरण में लिखित परीक्षा होगी, (ख) द्वितीय चरण में अंतरक्रियात्मक /कार्यशाला होगी, (ग) तृतीय चरण में साक्षात्कार होगा।

विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु नामांकन प्रक्रिया जारी है। अंतिम तिथि 15 जून तक है। विश्वविद्यालय में चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों की विस्तृत जानकारी हेतु विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.hindivishwa.org पर लॉगिन किया जा सकता है। साथ ही उपकुलसचिव अकादमिक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल, वर्धा (महाराष्ट्र) व दूरध्वनि 07152-251661, 232901, 252651 पर संपर्क किया जा सकता है।

प्रस्तुति-

अमित विश्वास

सहायक संपादक

म.गा.अ.हि.वि.वि. वर्धा